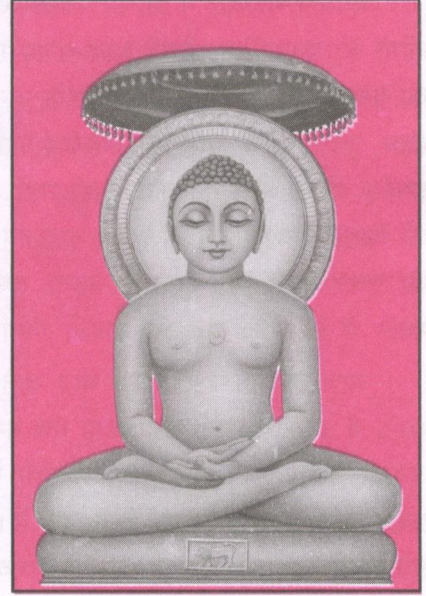


5. महावीर जयन्ती

डॉ० राममूर्ति वासुदेव 'प्रशांत'

भारत ऋषि-मुनियों, मनीषी-युगपुरुषों और अवतारों का देश है। असंख्य साधु महात्मा, पीर-पैगम्बर, जपी-तपी इस धरती का गौरव बढ़ाने के लिए समय-समय पर यहां जन्म लेते रहे हैं। राम, कृष्ण, बुद्ध तथा गुरु नानक सरीखे युगपुरुषों ने समाज में व्याप्त कुरीतियों, दुराचारों तथा अनाचारों को समाप्त करके सदैव मानवता का कल्याण किया है। जैनमत को व्यवस्थित करने वाले वर्धमान महावीर स्वामी भी ऐसे ही महापुरुषों में से थे जिन्होंने मानव मात्र को सन्मार्ग पर चलने का उपदेश दिया। भारत के लोग इन मनीषी महात्माओं की जयन्ती अथवा पुण्यदिवस बड़ी श्रद्धा से मनाते हैं ताकि उनके उज्ज्वल चरित्र से वे प्रेरणा प्राप्त कर सकें। महावीर जयन्ती भी जैन लोगों द्वारा भगवान् महावीर की सद्शिक्षाओं को उद्घाटित करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष बड़ी श्रद्धा से मनाई जाती है।



जैन धर्म में चौबीस तीर्थंकर हुए हैं। इस श्रृंखला में चौबीसवें और अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीर का नाम सर्वाधिक प्रसिद्ध है। प्रथम तीर्थंकर ऋणभ देव थे और तेईसवें पार्श्वनाथ हुए। जैनधर्म के अनुसार तीर्थंकर का अर्थ है—तीर्थ अर्थात् घाट बनाने वाला। इस प्रकार भवसागर से मुक्ति पाने के लिए घाट बनाने वाले महात्मा तीर्थंकर कहलाए। इन महात्माओं ने मानव को संसार रूपी समुद्र से पार उतरने की अनेक शिक्षायें और उपदेश दिए। जैन लोगों में ये तीर्थंकर परम पूजनीय माने जाते हैं।

भगवान् महावीर ऋषभदेव की ही तरह जैनधर्म के प्रचारक तथा उननायक थे, प्रवर्तक नहीं ऋणभदेव से पूर्व भी जैनधर्म की एक विशाल परम्परा थी। जैनियों के अनुसार जैनधर्म आनादि है। इस प्रकार प्रारंभ से लेकर जैन तीर्थंकर ने इस धर्म के प्रचार-प्रसार में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया। यही नहीं इन्होंने समय-समय पर धार्मिक शिथिलताओं को दूर करके मानवमात्र का कल्याण किया। जैनधर्म के इन तीर्थंकरों का सामाजिक आचार-विचार और अहार-विहार के उन्मयन में महत्वपूर्ण स्थान है।

भगवान् महावीर का जन्म आज से लगभग 2600 वर्ष पूर्व बिहार के कुंडनपुर नगर में राजा सिद्धार्थ के घर 599 ई.पू. में हुआ। उन की माता त्रिशाला तथा पिता सिद्धार्थ जैनियों के तेईसवें

तीर्थंकर पार्श्वनाथ के अनुयायी थे। उस समय देश में हिंसा का वातावरण व्याप्त था और धर्म के नाम पर मूक पशुओं की बलि दी जाती थी। धार्मिक क्षेत्र में अनेक पाखंड और आंडंबर व्याप्त थे। युवा होने पर महावीर ने इस धार्मिक पाखंडों, रूढ़ियों, अंधविश्वासों आदि के प्रति तीव्र विद्रोह कर दिया। उन्होंने लोगों की सद्धर्म, अहिंसा, सत्य, अदौर्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह का पाठ पढ़ाया।

भगवान् महावीर ने आचार-विचार एवं सद्व्यवहार की पवित्रता पर सदैव बल दिया। उन्होंने लोगों को पारस्परिक सौहार्द भाव बनाए रखने की शिक्षा दी। निर्वाण प्राप्ति तक वे निरन्तर सद्धर्म का प्रचार करते रहे। इस प्रकार उनके अनुयायियों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही रही। उन्होंने काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार आदि बुराइयों पर विजय प्राप्त कर ली थी। अतः वे 'जिन' अर्थात् जीतने वाले कहलाये। यही नहीं, उन्होंने अपने मन को हर तरह से जीत लिया था। उन की शिक्षाओं को मानने वाले जैन कहलाये। भगवान् महावीर आजीवन अपने विचारों और सिद्धान्तों का प्रचार करते रहे। अन्त में बहत्तर वर्ष की आयु में बिहार राज्य के अन्तर्गत पावापुरी नामक स्थान में 527 ई० पू० को उन्होंने निर्वाण पद प्राप्त किया।

आज लगभग 2500 वर्ष बीत जाने पर भी जैन लोग प्रति वर्ष भगवान् महावीर की पुण्य स्मृति में उनकी जयन्ती बड़ी श्रद्धा एवं धूमधाम से मनाते हैं। सम्पूर्ण भारत का जैन समाज महावीर जयन्ती की प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ल त्रयोदशी के दिन मनाता है। इस दिन जैन लोगों के द्वारा अनेक प्रकार के धार्मिक आयोजन किए जाते हैं। प्रत्येक नगर तथा ग्राम में महावीर जयन्ती के दिन प्रातः प्रभातफेरी निकाली जाती है। इस में भगवान् महावीर एवं जैन धर्म की जय जयकार बुलाता हुआ जैन लोगों का विशाल समूह भाग लेता है। इस समय भगवान् महावीर के जीवन पर रचे गये भजनों एवं गीतों का सस्वर गायन किया जाता है। नगर अथवा ग्राम के प्रमुख भागों से होता हुआ यह प्रभातफेरी जुलूस अन्त में किसी धार्मिक अथवा सार्वजनिक स्थान पर जैन ध्वजारोहण के कार्यक्रम के साथ सम्पन्न होता है।

इस दिन जैन मन्दिरों में भक्तों द्वारा भगवान् महावीर की पूजा-अर्चना भी की जाती है। पूजा के बाद शोभा यात्रा निकाली जाती है जिसमें अनेक प्रकार की धार्मिक झांकियां होती हैं। इस शोभा-यात्रा में भजन मंडलियों, बैडबाजे तथा स्कूलों के बच्चे धार्मिक गान करते हुए चलते हैं। रात्रि में तथा कई स्थानों पर दोपहर में भी सार्वजनिक सभाओं का आयोजन किया जाता है। इन में जैन साधु-सन्त तथा विद्वान् वक्ता भगवान् महावीर का गुणगान करते हुए हमें उनके सिद्धान्तों एवं शिक्षाओं का अनुसरण करने की प्रेरणा देते हैं।

महावीर जयन्ती के अवसर पर जैन लोग अनेक पुण्य के कार्य भी करते हैं। वे भूखों को भोजन, वस्त्रहीनों को वस्त्र, रोगियों को दवाइयाँ आदि निःशुल्क बांटते हैं। कहीं-कहीं कवि सम्मेलन तथा मुशायरों अथवा संगीत सन्ध्या का आयोजन भी किया जाता है रक्तदान शिविर, नेत्रोपचार शिविर, शाकादार, प्रदर्शनी आदि के आयोजन भी बड़े उल्लास एवं उत्साह से इस दिन

किए जाते हैं। हम भगवान् महावीर का जन्मदिन जीवदया, दान, सद्व्यवहार, सर्वधर्म, समभाव आदि के रूप में मानकर ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धा प्रकट कर सकते हैं।

* अभ्यास *

1. निम्नलिखित प्रश्नों के अति लघु उत्तर दीजिए :-
 - (क) जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर कौन थे ?
 - (ख) जैनधर्म के अनुसार तीर्थंकर का क्या अर्थ है ?
 - (ग) भगवान् महावीर का जन्म कब हुआ ?
 - (घ) महावीर किस कारण 'जिन' कहलाये ?
 - (ङ) भगवान् महावीर के माता-पिता का क्या नाम था ?
2. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए :-
 - (क) भगवान् महावीर के समय देश की कैसी दशा थी ?
 - (ख) उन्होंने लोगों को क्या पाठ पढ़ाया ?
 - (ग) महावीर जयन्ती के अवसर पर जैन लोग कौन-कौन से पुण्य के काम करते हैं ?
3. महावीर जयन्ती के उत्सव का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

